जे. नं. 41/2007-08
an No.: AAAAH8312B

सत्यमेव जयते

Mob. 9413235328
Mob. 9549501750

हनुमान ग्राम विकास समिति

A-4, प्रताप कॉलोनी, सोमनाथ नगर, दौसा (राज.)

Website: www.hgvs.co.in Email: hgvs.dausa@gmail.com

Watch Videos on You Tube: ghvs.dausa

क्रमांक 160/hgvs/015 (1) दिनांक 26/01/2015

श्रीमान् निदेशक महोदय,
कट्स सेन्टर फॉर कन्ज्यूमर रिसर्च एण्ड ट्रैनिंग
डी–218, भास्कर मार्ग, बनीपार्क जयपुर।

CASE STUDY OF ORGANIC FARMING

शादी के पूर्व कृषि के सम्बन्ध में ककहरा भी नहीं जानने वाली रूबी पारीक आज राज्य स्तरीय प्रगतिशील महिला कृषक के रूप में जानी जाती हैं। ससुराल आने के बाद पति को कृषि में संलग्न देखकर कृषि सम्बन्धित चर्चाये की। पति पहले से ही कृषि की जानकारी देने को उत्सुक थे। पारीक ऑर्गेनिक फार्म पर जैविक खाद को तैयार करते हुये देखकर रूबी की रूची उसे बढ़ाने

की जागृति हुई। 2008 में नाबार्ड के सहयोग से 200 एम.टी. की वर्मी हैचरी इकाई स्थापित की गई जो पूरे संभाग में सबसे बडी यूनिट के साथ साथ इसे नवाचार के रूप में भी देखा गया। वर्ष 2010 में नाबार्ड द्वारा चलाई जा रही किसान क्लब योजना में उनकी उपलब्धियों को देखते हुये अध्यक्ष पद पर चयन किया गया। इसके पश्चात् इस कृषक महिला ने जिले की अन्य कृषक महिलाओं को जैविक खेती की विशेष जानकारी देते हुये प्रशिक्षित किया। सन् 2012 में इस क्लब द्वारा जैविक खेती अपनायी जाने पर नाबार्ड द्वारा इन्हे राज्य स्तरीय पुरस्कार से नवाजा गया।

इस क्रम में आगे बढ़ते हुये इस महिला कृषक ने एक चमत्कारिक कार्य और कर दिखाया। यह कार्य पशु आहार के रूप में वरदान साबित हुआ। इसका नाम अजोला फर्न हैं जो पानी की बैंडों पर तैयार किया जाता हैं। यह भी जिले में नवाचार के रूप में देखा गया। इसके साथ ही पूरे संभाग में अदरक की खेती

करने वाली प्रथम सफल महिला कृषक के रूप में जानी गईं इस कार्य को देखने के लिये नाबार्ड, कट्स एवं स्वीडन से महिला प्रतिनिधि भी पारीक ऑर्गेनिक फार्म पर पहुंचकर इस महिला को बधाई दी।

जैविक कृषि की अभूतपूर्व सफलता ने रूबी की रूची को और सुदृढ़ कर दिया। वह जैविक कृषि के प्रति समर्पित भाव से कार्य करती रही और आखिर वह शुभ दिन रूबी के हाथ लग ही गया उसने ऐसी वस्तु की तलाश कर ली। जिसे पूरे संभाग में अनेका अनेक बागवानों से लाख कोशिश करके भी ऐसी सफलता हासिल नहीं की। यह थी जैविक अदरक की खेती। रूबी ने मार्च 2014 में ही यह तय कर लिया था कि इस वर्ष जैविक तरीके से अदरक तेयार करनी

हैं। मई 2014 में इसके लिये आवंला के बगीचे में तैयार की गई क्यारियों में अदरक लगा दी। प्रकृति ने रूबी का साथ नहीं दिया और समय पर बरसात नहीं हुई। बल्कि बरसात की जगह गर्मी ने भीषण रूप धारण कर लिया। किन्तु रूबी कब हार मानने वाली थी उसने अपने विश्वास को बिल्कुल भी नहीं डगने दिया और अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा पर विश्वास कायम रखा। अन्ततः बारिश हु ई और अदरक की खेती लहलाती नजर आने लगी। आस पास के गांवों में खबर पहुंचती गई और कृषकों का कोतूहल मचने लगा। जिसने रूबी के आत्मविश्वास को और भी सुदृढ़ किया। यह खबर जैविक कृषि से जुडे हुई कई विभागों तक पहुंच गई इसमें नाबार्ड, कट्स एवं स्वीडन से कई अधिकारी बारी–2 से पारीक ऑर्गनिक फार्म खटवा पर पहुचे। अधिकारी एवं वैज्ञानिकों को बार बार आते देखकर ग्रामीणों का मेला सा लगता रहा और तो और इस महिला ने पूरे जिले में पशु आहार के रूप में अजोला फर्न का नवाचार अपने फार्म के माध्यम से पूरे जिले में फैलाया। धन्य हैं रूबी की रूची और साहस जिसने इस दुर्लभ कार्य में हाथ डालकर सफलता हासिल की। लिहाजा इस कृषक महिला ने पूरे जिले में 318 महिलाओं को जैविक खेती का प्रशिक्षण देकर प्रशिक्षित किया। जिनका परिणाम शत प्रतिशत देखने को मिला।

इन सभी उपलब्धियों को देखते हुये लालसोट ब्लॉक में नवम्बर 2014 में ब्लॉक स्तरीय किसान क्लब महासंघ का गठन हुआ। जिसमें क्षेत्रीय क्लबों के प्रतिनिधियों द्वारा चैयरपर्सन (अध्यक्ष) पद पर निर्वाचित किया गया। बस अब कया था इस महिला ने कृषक कल्याण के लिये पूरे देश को यह संदेश दिया कि हर कृषक को अपने कृषि फार्म पर एक वर्मी कम्पोस्ट यूनिट एवं अजोला फर्न यूनिट लगाना चाहिये, ताकि किसान एवं देश हित में कार्य हो सके इससे हमारा पर्यावरण स्वच्छ एवं वायुमण्डल भी सुरक्षित हो सकेगा।

कट्स द्वारा राजस्थान के 6 जिलो में राजस्थान में जैविक उपभोग को बढ़ावा देने के लिये परियोजना (प्रो ऑर्गेनिक), स्वीडीस सोसायटी फॉर नेचर कन्जरवेशन, स्वीडन के आर्थिक सहयोग से संचालित की जा रही हैं।

(6)

हनुमान ग्राम विकास समिति द्वारा दौसा जिले में परियोजना का संचालन किया जा रहा हैं। दौसा जिले में प्रो–ऑर्गेनिक परियोजना के तहत जिला स्तरीय कृषक आमुखीकरण कार्यशाला का आयोजन 28 मई 2014 को जैन धर्मशाला में प्रधान वैज्ञानिक एवं कट्स के प्रतिनिधियों के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ एवं उसी परिप्रेक्ष्य में 29 मई 2014 को प्रायोगिक भ्रमण का आयोजन पारीक ऑर्गेनिक फार्म खटवा में किया गया था जिसमें 75 किसानों की सहभागिता रही। जैविक खेती कर रही रूबी पारीक द्वारा किसानों को आमुखीकरण के लिये विषय–वस्तु की जानकारी को प्रायोगिक तरीके से दिखाने के लिये स्थान का चयन किया गया था।

स्थानीय धर्मशाला में बताये गये जैविक खेती के लाभों एवं वास्तविकता से रूबरू करवाने के लिये कृषकों को पारीक ऑर्गेनिक फार्म खटवा में ले जाया गया और रूबरू कराया गया।

रूबी पारीक एक ग्रामीण महिला होते हुये वास्तव में आजीविका की नई राह दिखाने में सफल हुई हैं।

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक
हनुमान ग्राम विकास समिति
A/4 प्रताप कॉलोनी सोमनाथ नगर दौसा

सूकरपालन से चमके सुरेन्द्र

प्रगतिशील पशुपालक सुरेन्द्र ने कहा कि शुरू से ही मेरा झुकाव पशुपालन की ओर रहा। खेती व पशुपालन परिवार का मुख्य व्यवसाय है। बीएड करने के उपरांत वर्ष 1995 में शिक्षक पद पर चयन होने के पश्चात कुछ दिनों नौकरी भी की। लेकिन, नौकरी छोड़कर पशुपालन को ही मैंने आजीविका का मुख्य स्रोत बनाया। डेयरी से शुरुआत कर बाद में मुर्गी, सूकर व बकरीपालन का व्यवसाय भी शुरू किया। सालाना 12 से 15 लाख रुपए की आमदनी मिल जाती है।

रिपोर्ट : शरद शर्मा

सुरेन्द्र सिंह
मो. : 9001457409

लालामंडी/झुंझुनूं। फूल, फूल है आँखों में बस जाता है, शूल, शूल है पांवों में गड़ जाता है, कांच, कांच है बेशक चमकेगा, लेकिन जो हीरा है, मुकुट-मणि बन जाता है। राजस्थान के पशुपालन क्षेत्र के एक ऐसे ही हीरे हैं सुरेन्द्र सिंह, जो गौ-पालन के साथ बड़े पैमाने पर मुर्गी, सूकर व बकरीपालन का कार्य वैज्ञानिक ढंग से कर रहे हैं। इस क्षेत्र से आत्मिक लगाव के चलते सुरेन्द्र सरकारी नौकरी भी ठुकरा चुके हैं। कृषि के साथ सूकर, मुर्गीपालन व बकरीपालन के कार्य को व्यावसायिक रूप देकर किया जाए तो आम किसान व पशुपालक भी सुरेंद्र जैसा रोल मॉडल प्रदेश के लिए बन सकता है। जरूरत है, हौंसले भर की, सफलता की सीढ़ी आपके कदमों के इंतजार में रहेगी। झुंझुनूं जिले के ग्राम लालामंडी के किसान परिवार में जन्मने वाले सुरेन्द्र सिंह ने 12वीं तक की पढ़ाई कृषि विषय से पूरी की, बाद में स्नातक (अंग्रेजी साहित्य) और बी.एड की उपाधि प्राप्त की। प्रगतिशील पशुपालक सुरेन्द्र सिंह ने बताया कि परिवार के पास संयुक्त रूप से 400 बीघा जमीन होने से पढ़ाई के दौरान आर्थिक अभावों से सामना नहीं हुआ। मैं अपने कर्तव्यों का समय के साथ पालन करता रहा और सफलता कदमों को चूमती रही। उन्होंने बताया कि गौ-पालन का कार्य दादाजी के समय से होता आया है, इस कारण बचपन का खाली समय गायों की देखरेख में गुजरा है। पढ़ाई पूरी होने के उपरांत वर्ष 1997 में शिक्षा विभाग में बतौर शिक्षक नौकरी लग गई, किन्तु गौ-पालन से आत्मिक लगाव के चलते नौकरी को छोड़ दिया। उन्होंने बताया कि जमीन की उपलब्धता अच्छी होने से चारे-पानी की कोई कमी नहीं थी। इसी को देखते हुए वर्ष 2000 में इस ओर कदम बढ़ाया, शुरुआत डेयरी से हुई। घर में मौजूद गौ-धन का वैज्ञानिक तरीके से पालन-पोषण आरम्भ किया और साथ ही हॉलिस्टिन व जर्सी नस्ल की गायों की खरीद की। वर्तमान में 25 गाय मेरे पास है, इनमें 12 गाय हॉलिस्टिन, 5 गाय जर्सी व शेष देशी गौवंश हैं। इनसे प्रतिदिन 150 किलो दुग्ध का उत्पादन हो रहा है। परिवार की आवश्यकता पूर्ति के बाद शेष बचे दुग्ध का विपणन डेयरी को कर देता हूं। प्रतिमाह खर्चा निकालने के बाद 50-60 हजार रुपए की आमदनी मिल जाती है। उन्होंने बताया कि गौ-पालन के बाद बागवानी फसलों की ओर कदम बढ़ाना मैंने उचित नहीं समझा। मजदूरों की कमी के चलते इस क्षेत्र में परेशानी उठानी पड़ सकती थी, इस कारण मुर्गी, बकरी व सूकर पालन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। गायों को वर्ष भर हरे चारे की आपूर्ति होती रहे, इसके लिए जमीन पर 4 ट्यूबवैल मेरे पास है। मैदानी फसल ग्वार, गेहूं, जौ, चना, सरसों का उत्पादन लेता हूं।

28 सदस्यीय परिवार

प्रगतिशील पशुपालक सुरेन्द्र सिंह ने बताया कि पिताजी से छोटे तीन भाई और है। तीनों भाईयों का परिवार संयुक्त रूप से एक जगह निवास करता है। परिवार में कुल 28 सदस्य है। परिवार के सहयोग से ही आज यह कार्य बुलंदियों को छू रहा है।

सूकरपालन

उन्होंने बताया कि सूकरपालन से जुड़े हुए अभी डेढ़ साल ही हुआ है। दो नस्ल के सूकर मेरे पास है। इनकी संख्या 200 के करीब है। सूकर पालन से करीब 4 लाख की आमदनी शुरुआती वर्ष में प्राप्त की है।

केज प्रणाली से मुर्गीपालन

उन्होंने बताया कि केज प्रणाली से मुर्गीपालन कार्य कर रहा हूं। वर्तमान में 40 हजार मुर्गियां मेरे पास है। जिंद (हरियाणा) से चूजों की खरीद करता हूं। मुर्गीपालन का कार्य आरम्भ करने से पूर्व हिसार विश्वविद्यालय से इस विधा का प्रशिक्षण लिया। सालाना 5 बैच मुर्गियों के निकल जाते हैं। प्रति बॉयलर 5 रुपए की शुद्ध बचत मिलती है। प्रति बैच करीब 2 लाख रुपए की आमदनी मिल जाती है।

बकरीपालन से चरक[illegible]

पशुपालक सुरेन्द्र सिंह ने बताया बकरीपालन की शुरुआत 2 [illegible] से की थी, आज इनकी संख्या 2[illegible] का आंकड़ा छू गई है। प्रति बकरी औसतन 3 हजार की आमदनी [illegible] जाती है। बकरीपालन से सालाना [illegible] लाख रुपए की आमदनी मिल [illegible] है। बकरियों की चराई के लिए [illegible] हजार अरडू व 500 पेड़ खेजड़ी लगाए हुए है। अरडू के पेड़ 10 साल व खेजड़ी के 8 साल के हो चुके हैं। [illegible]

15 व्यक्तियों को रोजगार

उन्होंने बताया कि परिवार के सदस्यों के सहयोग के अलावा 15 व्यक्तियों को वर्षभर रोजगार पर रखा हुआ है। इनमें 2 व्यक्ति गौ-पालन, 2 बकरीपालन, 2 सूकरपालन व 9 व्यक्ति पोल्ट्रीफार्म का कार्य देखते हैं।

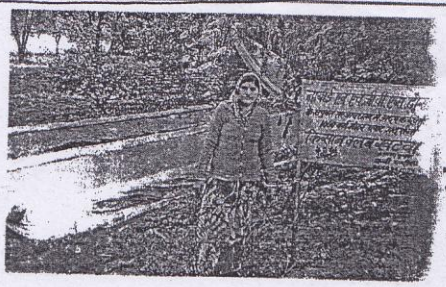

जैविक कृषि में रूबी का करिश्मा

रूबी पारीक
मो. : 9462943039

प्रगतिशील महिला कृषक रूबी पारीक ने बताया कि शादी से पूर्व तक मैं कृषि का ककहरा भी नहीं जानती थी। ससुराल आने के बाद ही फसलों के साथ जैविक खादों के बारे मुझे पता चला। पति शादी पूर्व से ही कृषि से जुड़े थे। शुरुआत में तो मुझे कृषि का कार्य कुछ अट-पटा सा लगा। लेकिन आज मैं खेतों की जिम्मेदारी अच्छे से संभाल रही हूं। क्षेत्रीय किसानों के बीच आज मुझे प्रगतिशील महिला कृषक के रूप में पहचाना जाता है।

फल-सब्जी से अच्छी आमदनी

इसके अलावा सब्जी फसलों में करेला, मटर, मैथी, लौकी सहित अन्य सब्जियों व बेल वाली सब्जियों का उत्पादन ले रही हूं। सब्जियों का उत्पादन करीब एक हैक्टेयर क्षेत्र में ले रही हूं। [illegible] तालाब 4 लाख रुपए की आमदनी मिल जाती है।

ऐसे लिया अदरक का उत्पादन

प्रगतिशील महिला कृषक रूबी ने बताया कि वर्ष 2011 में अदरक के बीजों के लिए तैयार क्यारियों में मैंने अदरक की बुवाई कर दी। लेकिन, बारिश नहीं हुई। [illegible]

छरसा, दौसा। पूर्ण रूप से जैविक कृषि करना आसान काम नहीं है और किसान जब महिला हो तो कार्य और भी मुश्किल सा प्रतीत होता है। लेकिन, प्रगतिशील महिला किसान रूबी पारीक ने जैविक खेती में सफलता दर्ज करवाई है। रूबी ने जैविक तरीके से अदरक का उत्पादन लिया है। यह कोई वर्षों की मेहनत नहीं बल्कि गत वर्ष की ही मेहनत का परिणाम है। दौसा जिले के गांव छरसा से ताल्लुक रखने वाली प्रगतिशील महिला किसान रूबी ने बताया कि खेती का कार्य मेरे लिए बिल्कुल नया था। वर्ष 2003 में शादी हुई। पति ओ.पी. पारीक ने पढ़े लिखें होने के बावजूद भी खेती को आजीविका का मुख्य साधन बनाया हुआ है, साथ ही हनुमान ग्राम विकास समिति का गठन किया हुआ है। जो किसानों को उन्नत कृषि तकनीक पहुंचाने का कार्य करती है। उन्होंने बताया कि पति को केंचुआ पालन कर वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने का कार्य शुरुआत में तो मुझे कुछ अट पटा सा लगा। कुछ समय गुजरने के बाद जब मुझे वर्मी कम्पोस्ट के महत्व के बारे में पता चला तो मैंने भी पति के कार्य में हाथ बटाना आरम्भ कर दिया। आज मैं अकेले ही केंचुआं पालन यूनिट का कार्य देख रही हूं, साथ ही खेत पर आने वाले अन्य किसानों को भी वर्मी कम्पोस्ट से खेती में मिलने वाले लाभ के बारे में बता रही हूं। उन्होंने बताया कि नाबार्ड की सहायता से स्थापित केंचुआं यूनिट की क्षमता मासिक रूप से 200 मैट्रिक टन के करीब है। पहले परम्परागत तकनीक से ही परम्परागत फसलों का उत्पादन लेते रहे किन्तु गत 4-5 वर्षों से लगभग सभी फसलों का उत्पादन जैविक तरीके से ले रहे हैं। किसान रूबी ने बताया कि टीवी पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में कृषि रसायनों का मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को समझने के बाद जैविक खेती करने का निर्णय लिया और इस कार्य में मेरे पति ने मदद की। उनके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन से ही जैविक खाद तैयार करना जैविक कीटनाशी जैविक फसलों उत्पादन का तरीका मैंने सीखा। उन्होंने बताया कि गत पांच वर्षों से गेहूं, सरसों, बाजरा सहित अन्य फसलों का उत्पादन जैविक विधि से ले रही हूं। परिवार के पास लगभग पांच हैक्टेयर जमीन है इसमें से तीन हैक्टेयर क्षेत्र उद्यानिकी फसलों के अन्तर्गत आ चुका है। जैविक खेती के अनुभवों को साझा करते हुए महिला कृषक रूबी ने बताया कि रासायनिक खादों का इस्तेमाल करना जब से बंद किया है तब से ही खाने का जायका ही बदल गया है। खेतों की दशा में भी सुधार आया है। कृषि लागत में भी कमी आई है।

अजोला उत्पादन

पशुधन के रूप में 3 हॉलिस्टिन नस्ल की गाय व 2 मुर्राह नस्ल की भैंस मेरे पास है, इनसे प्रतिदिन दोनों समय का मिलाकर करीब एक क्विंटल दुग्ध का उत्पादन मिल रहा है। उन्होंने बताया कि दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए हाल ही मैंने अजोला की तीन इकाईयां स्थापित की है। अजोला खिलाने से पशुओं की दुग्ध क्षमता में 10 से 15 प्रतिशत की वृद्धि नजर आई है। बाजार में दूध 30-36 रुपए प्रति लीटर के भाव से आसानी से बिक जाता है।

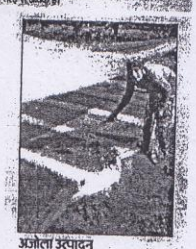

संतरे से मालामाल लादूलाल

लादूलाल
मो. : 9928557499

कदम चूम लेगी खुद बढ़कर मंजिल, मुसाफिर अगर हिम्मत न हारे। मनुष्य के अंदर यदि कुछ करने का जज्बा हो तो आनंद ही कुछ और होता है। व्यवसाय हो या खेती की लगन और कर्तव्य निष्ठा से कार्य करने से खुद मुकाम हासिल हो जाता है। यह कथन है भीलवाड़ा जिले के नवोदित एवं प्रगतिशील किसान लादूलाल माली का।

घी से आय

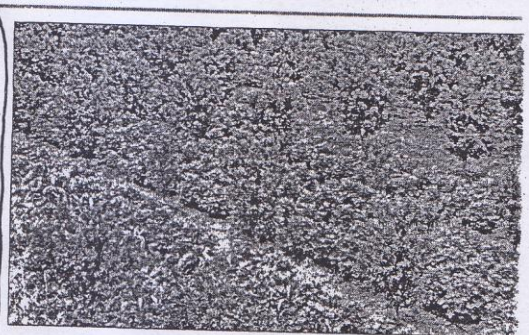

पशुधन में मेरे पास एक दर्जन मवेशी है। इनसे प्राप्त दूध का विपणन नहीं करके [illegible] बनाता हूं। पशुधन से प्राप्त घी की अच्छी मांग है। इससे अच्छी आमदनी हो [illegible] है। वहीं दूसरी ओर पशुधन से प्राप्त गोबर फसलों के लिए खाद का काम करता [illegible]

सवाईपुर/भीलवाड़ा। प्रगतिशील किसान लादूलाल माली ने महज 30 वर्ष की उम्र में ही जीवन का मर्म समझकर अपने हाथों अपनी तकदीर लिखना शुरू कर दिया। इसी मेहनत के सहारे इनका परिवार सम्पन्नता की सीढ़ी चढ़ा है। वहीं क्षेत्र के हम उम्र बेरोजगार साथियों के सामने अनूठा उदाहरण पेश किया है।

संतरा की खेती में जिंदगी की तस्वीर देखने वाले लादूलाल बताते हैं कि खेती का कार्य पुश्तैनी रहा है। यूं तो पांच भाईयों के परिवार के पास खेती की कुल 15 बीघा जमीन है। बंटवारे के बाद करीब 3 बीघा जमीन पिताजी के हिस्से में आई। इसी बीच पिताजी की तबीयत खराब रहने के कारण दसवीं बाद ही खेती सम्भालनी पड़ी। जिस समय खेती का जिम्मा उठाया, उस समय राम खेती ही थी। बरसात होती तो फसल खेत से घर आती, नहीं तो पड़त। थोड़ी बहुत जमा पूंजी से वर्ष 2001 में 90 फिट गहराई पर बोरवेल खुदवाया। लेकिन सिंचाई की जहां बात आई वहां बात नहीं बनी। वर्ष 2003 में कुआं खुदवाया इससे सिंचाई की व्यवस्था को मजबूती मिलने के साथ ही विपरित आर्थिक हालातों से लड़ने का जज्बा भी मन में जगा।

पढ़ाई के दौरान यह कभी नहीं सोचा था कि मैं खेती में अपनी जिंदगी की सूरत सवारूंगा। माली ने बताया कि कुआं खुदवाने के बाद तक मक्का, ज्वार आदि परम्परागत फसलों [illegible] उत्पादन लेता रहा। इससे [illegible] आर्थिक स्थिति में सुधार आया। कृषि की जानकारी से रूबरू होने [illegible] कृषि कार्यक्रमों में भाग लेने लग[illegible] बीच क्षेत्र के कृषि पर्यवेक्षक से [illegible] हुआ और उन्होंने मुझे संतरा की [illegible] बारे में बताया।

संतरे की खेती का सुझाव पाने [illegible] पिताजी से बात की तो उन्होंने [illegible] बाद हामी भर दी। इससे पूर्व [illegible] जमीन की खरीद भी की। वर्ष 20[illegible] बीघा जमीन में संतरे के 540 पौ[illegible] किए। कृषि अधिकारियों के मार्ग[illegible] संतरे के पौधों की देखरेख करता र[illegible] का परिणाम इस वर्ष देखने को [illegible] हालांकि उत्पादन अभी कम मिल [illegible] लेकिन आशा है कि भविष्य में [illegible] सोना बरसाएगी।

उन्होंने बताया कि जिस [illegible] बगीचा लगाया, उसमें आमदनी [illegible] लिए नगदी फसल कपास की खे[illegible] लगा। इससे डेढ़ से दो लाख [illegible] आमदनी होती रही। अब संतरे के [illegible] होने से इस फसल को दूसरे खेतों [illegible] रहा हूं। उन्होंने बताया कि खेतों [illegible] फसल का उत्पादन ड्रिप विधि से [illegible] रहा है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक शरद शर्मा के द्वारा अम्बर ऑफसेट प्रा. लि., डी.एल. टॉवर, 3 ए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर से मुद्रित एवं सी-17, पुरोहित जी का बास, सरकारी मिडिल स्कूल के पास, 22 गोदाम, जयपुर-302006 से प्रका[illegible]
संपादक : शरद शर्मा। फोन : 0141 4021593, फैक्स : 0141 2281593, ईमेल : haldhartimes@gmail.com or rediffmail.com (सभी मामलों का न्याय क्षेत्र जयपुर)